Journal of the Oriental Institute
M.S. University of Baroda
ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

डॉ. लता अग्रवाल की लघुकथाओं में सामाजिक कुरीतियों का यथार्थ चित्रण
"'दहलीज का दर्द' एवं 'लकी है हम' के विशेष संदर्भ में"

कोमल वर्मा, शोधकर्ता, न्यू आर्ट्स, कॉमर्स एवं सायन्स महाविद्यालय, अहमदनगर
डॉ. हनुमंत जगताप, शोध निर्देशक, न्यू आर्ट्स, कॉमर्स एवं सायन्स महाविद्यालय, अहमदनगर

मुख्य संबोध

लघुकथा, सामाजिक कुरीतियाँ, रुढ़ी, परंपरा, दहेज प्रथा, कन्यादान, गर्भपात, कन्याभ्रूण हत्या, विसर्जन, कुलदीपक एवं जन्मोत्सव आदि।

प्रस्तावना :

डॉ. लता अग्रवाल की लघुकथाओं में सामाजिक कुरीतियों का यथार्थ चित्रण मिलता है। भारत देश में अनेकता में एकता और रीती-रिवाजों में विविधता पाई जाती है, यही भारतीय संस्कृति की विशेषता है। परिवर्तन संसार का नियम है, वक्त के साथ-साथ कई चीजें बदल जाती है। लेकिन कुछ संस्कार हमारे अंदर हमारे समाज में कितने रच पच गये हैं कि चाहकर भी हम उन्हें बदल नहीं पाते। इनमें कुछ बातें ऐसी भी होती है, जिन्हें रुढ़ी मानकर परंपरा के नामपर जबरदस्ती निभाया जाता है। जब जबरन रुढ़ीयों और परंपराओं को निभाया जाता है तो वह सामाजिक पूर्ति के रूप में उभरता है।

विषय प्रवेश :

आज भारतीय समाज में दहेज प्रथा, बालविवाह, कन्या भ्रूणहत्या, परदा प्रथा, मृत्युभोज आदि कई सामाजिक कुरीतियाँ विद्यमान है। डॉ. लता अग्रवाल की लघुकथाओं में इन्हें सामाजिक कुरितियों का चित्रण देखने को मिलता है। इन लघुकथाओं को पढ़ने के बाद पाठकवर्ग एवं समाज चिंतन करने पर मजबूर हो जाता है। लेखक के यथार्थ वर्णन को लेकर बाबू गुलाबराय का कथन है, "कवि या लेखक अपने समय का प्रतिनिधि होता है। उसको जैसा मानसिक खाद मिल जाता है, वैसी ही उसकी कृति होती है। वह अपने समय के वायुमंडल में घूमते हुए विचारों को मुखरित कर देता है। कवि वह बात कहता है, जिसका सब लोग अनुभव करते है, किंतु जिसको सब लोग कह नहीं सकते। सहृदयता के कारण उसकी अनुभव-शक्ति औरों की अपेक्षा अधिक होती है।"[1] साहित्य और समाज एक-दूसरे को निरंतर प्रभावित करते है। दोनों में क्रिया-प्रतिक्रिया का भाव चलाए रहता है। समाज में जो घटित होता है उसका चित्रण साहित्य में देखने को मिलता है। साहित्य के माध्यम से ही समाज की स्थितियों का अंदाजा लगाया जा सकता है।

'पूज्यन्ते नारी' :

डॉ. लता अग्रवाल का साहित्य वर्तमान सामाजिक कुरितियों को सबके सामने प्रस्तुत कर समाज का असली चेहरा उजागर करता है। एक तरफ तो समाज नारी को लक्ष्मी मानता है, उसे पूजना है तो वहीं दूसरी

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

और उस पर तरह तरह के ुलि् म ढाता है। ‘पूज् य तेन् नारी’ लघुकथा में दहेि प् र था का जति् रहैे। जमलत लघुकथा की नाजयका कृष् णा को उसका पजत , सास दहेि के जलए ताजपि् र त करते थे। इसजलए कृष् णाा अपनी आत्मरक्षा के लिए पुलिस की सहायता लेती हैं।

‘कन्यादान’ :

लता अग्रवाल ने दहेज प्रथा पर व्यंग्य कसते हुए। भारत में चली आ रही इस सामाजिक कुरीतीं पर कड़ा प्रहार किया है। समाज के कुछ संपन्न लोक अपनी बेटियों की शादी पर, या कहा जाए तो दिखावे के लिए लाखों करोड़ों रुपये खर्च कर देते है। समाज पर इसका बुरा असर देखने को मिलता है। क्योंकि जो माता-पिता अपनी बेटी को कुछ नहीं दे पाते, दहेज नहीं दे पाते उन बच्चियों को ससुराल में कई यातनाओं से गुजरना पड़ता है। शायद इन्हीं समस्याओं को ध्यान में रखकर लता अग्रवाल अपनी ‘कन्यादान’ लघुकथा में शादी के समय ही पंडित जी द्वारा दूल्हे से दहेज न माँगने का, दहेज के लिए परेशान न करने का वचन लेकर ही कन्यादान करवाते है। दूल्हे का पिता जब पंडित को फेरे पूरे करवाने को कहता है। तो किन्नर गुरू कहता है, “आ..हों! पंडित जी दूल्हे से वचन लो, कभी हमारी बेटी को दहेज के लिए परेशान नहीं करेगा तभी हम अपनी बिटिया का कन्यादान करेंगे।”[2]

बढ़ती दहेज प्रथा एवं लड़कियों पर होने वाले अन्याय, अत्याचार के कारण समाज में अन्य दूसरी कुरितियों ने जन्म लिया, जिनमें कन्या कन्या भ्रूण हत्या भी सामिल है। दहेज प्रथा के कारण गरीब एवं मध्यम वर्गीय घरो में लड़कियों का जन्म लेना अभिशाप समजा जाने लगा। दहेज ना देना पड़े इस कारण पेट में ही भ्रूण की जाँच कराकर उसकी हत्या की जाने लगी। कहीं-कहीं बेटों की चाह में भी कन्या भ्रूण हत्याएँ की जाती हैं। ये हमारे सभ्य भारतीय समाज पर लगा हुआ सबसे बड़ा कलंक है। वर्तमान समय इस घटना को लेकर समाज को उसके ही फलोका प्रतिफल दे रहा है। आज कई लड़के कुँआरे घूम रहे है। उन्हें शादी के लिए लड़की नहीं मिल रही है।

‘पुण्य-अक्षुण्य’ :

डॉ. लता अग्रवाल की लघुकथा ‘पुण्य-अक्षुण्य’ में कन्याभ्रूण हत्या का चित्रण है। रितेश और उसके परिवार को जैसे ही पता चलता है कि नमि के पेट में लड़की है तो वह उसका गर्भपात करवाना चाहता है। यहाँ एक माँ का अंतर्द्वंद्व चित्रित हुआ है।

इसी लघुकथा में कन्याभ्रूण हत्या पाप है और बेटियाँ तकदीर वालों के घर में ही जन्म लेती है यह भी बताया गया है। कहानी कि नायिका अपने पेट में पल रही बच्ची को बचाने के लिए भगवान से प्रार्थना करती है। तो उसकी ननद रंजना उसकी मदद के लिए सामने आती है। वह कहती है, “भाभी! कलयुग में बेटियाँ तकदिर वालों को नसीब होती है...यह बात हम दोनों मिलकर घरवालों को समझायेंगे और उन्हे समझना ही होगा।”[3]

'प्रतिमा विसर्जन' :

लता अग्   रवाल की लघुकथा 'जतमा जवसथिनप्   र' में कन्   यार् ूण हत्   या सैति सामाजिक जवक् ही मार्   मथक ढंग से प्   रकाश डाला गया है। लघुकथा में एक छोटी बच्ची, दादू, और देवी माँ का विसर्जन इसके माध्यम से कन्याभ्रूण हत्या गलत है यह दिखाया गया है। देवी माँ का विसर्जन करने पर जब छोटी बच्ची अपने दादू से पूछती है कि देवी माँ को डुबो क्यों दिया तो दादू कहते है, "यह एक प्रथा है मेंरी बच्ची, हम देवी माँ को आमंत्रित करते है, नौ दिन उत्सव मनाते है, फिर दसवें दिन उन्हें उनके घर भेज देते है। इसे विसर्जन कहते हैं। यह एक परंपरा है बेटी।"[4] दादू की यह बात सुनकर छोटी बच्ची जो कहती है वह मानवीय संवेदना को झकझोरने के लिए पर्याप्त है। वह कहती है, "यही कि यह एक परंपरा है। माँ को भी समझाऊँगी रोया न करे, जब से अस्पताल से आयी है रोती रहती है। दादी कहती है बेटी भी देवी का रूप है। इसलिए मेंरी बहन का भी विसर्जन किया होगा।"[5] छोटी बच्ची द्वारा कहीं गई ये बात हमें सोचने के लिए मजबूर करती है कि एक तरफ नारी को हम दुर्गा सरस्वती एवं लक्ष्मी का रूप मानते है और वही रूप जब हमारे घर में जन्म लेना चाहता है तो उसे हम पेट में ही रौंद देते है।

'डर से डर हार' :

दहेज प्रथा और लड़कियों पर होने वाले अत्याचारों के कारण जिस घर में एक से अधिक बच्चियाँ जन्म लेती है उस घर की औरत का जीना नामुकिन हो जाता है। 'डर से डर हार' लघुकथा में सुखियाँ अपनी पत्नि भुवना को हमेंशा डाँटते-फटकारते और मारता रहता है, क्यों कि भुवना के पेट से तीन-तीन लड़कियाँ पैदा हुई है। प्रस्तुत लघुकथा के माध्यम से लता अग्रवाल ने नारी मन की व्यथा को चित्रित किया है।

"सास के रोज-रोज के तानों की आदि हो गई थी भुवना। सोचती कहाँ जाऊँ? एक तो गरीब बाप की बेटी जिस पर तीन-तीन बेटियों को जन्म देने की सजा तो पाना ही है। सो इसी को भाग्य का लेखा मान सह रही है बेचारी। बेटियों के कारण उसे जाने क्या-क्या सुनना पड़ता है मगर फिर भी बेटियों के लिए उसकी ममता पर कोई कमी नहीं आई। रात को भी तीनों बेटियाँ जब माँ से चिपक कर सोती तो उसे लगता उसकी दुनिया पूरी हो गई। माँ ही उनकी दुनिया थी, बाप की नफरत और दादी की गालियों ने कभी उनके पास ही नहीं जाने दिया। तीनों मासूम बच्चियाँ हर वक्त डरी सहमी सी रहती ना जाने कब उन पर कहर टूट पड़े।"[6]

तीन बच्चियों के वजह से सास भी हमेंशा ताने मारती रहती। हमारे भारतीय समाज में एक और बड़ी कुरिती ये है कि लड़के को खानदान का वारीस, कुलदीपक, वंश का दीया माना जाता है तो लड़कियों को पराया धन माना जाता रहा है।

'पौरुष' :

'पौरुष' लघुकथा में भी लड़का और लड़की का भेद किस तरह समाज पर हावी है इसका चित्रण मिलता है। कहानी का नायक उपेंद्र लड़के की चाह में अपनी पत्नि की और स्वयं की सेहत का खयाल नहीं

रखता और छह लदिकयों का बाप बन गिता है। आजखर ऐसा क् या होता है लकिों में गि समाजिहर परिवार अपने घर में बेटा ही चाहती है।

'पौरुष' लघुकथा में उपेंद्र का दोस्त जो कि एक किन्नर है वह उपेंद्र को समझाता है, "उपेंद्र! अब बस ी कर यार ...ओपरेशन करा ले, ार् ी की हालत देखी हैखीपीली पड़ गई है।" "मेंरे यारा! जब तक बेटा पैदा न कर लूँ काहे का मर्द।" "बेटा पैदा करना ही मर्द की निशानी नहीं में मेंरे यारा।"[7]

लड़का और लड़की भगवान के घर कि देन है, इसमें पुरुषार्थ कहाँ से आया? 'पराया धन' लघुकथा में भी लड़का और लड़की में भेद कर उनकी शिक्षा पर बल दिया गया है। जहाँ लडकों को खानदान का वंश मानकर इंजीनियरिंग और बी.कॉम पढ़ाया जाता है और जब लड़की की शिक्षा की बात आती है। तो कहा जाता है कि "चल चुप कर कर, पराया धन है हमें का फायदा पढ़ाकर, कल को अपने घर चली जाएगी।"[8]

'मुस्कान के लुटेरे' :

वर्तमान समाज में हम देखते है की समाज में काफी बदलाव आ रहा है। लड़की के जन्म का जन्मोत्सव मनाया जा रहा है। लेकिन आज भी समाज के कई हिस्सों में लड़कियों के साथ अन्य अत्याचार की घटनाएँ घटित हो रही है। समाज में घटित इन घटनाओं के कारण समाज का एक तबका अपनी बच्चियों को लेकर हमेशा परेशान रहता है। उन्हें हमेशा यह डर सताता है कि उनकी बच्चियों की मुस्कान कोई छीन ना ले। 'मुस्कान के लुटेरे' लघुकथा में इसी समस्या का चित्रण है। "मम्मी! बहुत दुःख रहा है, मम्मी! अब मैं कभी स्कूल नहीं जाऊँगी, मम्मी! वो बस, वाले अंकल बहुत खराब है।"[9]

निष्कर्ष :

1. लता अग्रवाल की लघुकथाओं में नारी जीवन से संबंधित सामाजिक कुरितियों का पर्दाफाश हुआ है। लता अग्रवाल ने इन सामाजिक कुरितियों का यथार्थ अंकन किया है।
2. इन सामाजिक कुरितियों को दूर करने के लिए आज की युवा पीढ़ी को स्वयं तथा समाज की मानसिकता में, सोच में बदलाव लाना होगा।
3. अगर समाज समय के साथ अपने आप को नहीं बदलता तो इसका खामियाजा आनेवाली पीढ़ियों को सालो साल भुगतना पड़ेगा।
4. एक स्कूल जानेवाली छोटी बच्ची के साथ बलात्कार होता है, कहीं-कहीं 70 साल की बूढ़ी औरत के साथ बलात्कार होता है, कहीं दहेज के कारण लड़की को जला दिया जाता है, शायद यही कारण है सामाजिक कुरितियों के जन्म का। सामाजिक कुरितियों अपने आप नहीं पनपति समाज उन्हें आगे बढ़ाता है।
5. दहेज प्रथा, बाल विवाह, प्रर्दापथा, कन्याभ्रूण हत्या इनको रोकना समाज की भलाई के लिए आवश्यक है।

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

6. लदिकयाँ आिअपने हुनर के दम पर आसमान छू रही है । इसजलए लकिा-लकिी में र् ेद न करते हुए सबको एक समान मानना ाजिहए और समाि में जस् थ जत और पनप रही सामाजकि कुररजतयों पर कुठाराघात कर नए समाज का निर्माण करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ :

1. शर्मा राजनाथ, साहित्यिक निबंध, पृ. क्र. 371
2. अग्रवाल लता, दहलीज का दर्द, विकास प्रकाशन कानपुर, 2020 पृ. क्र. 54 (कन्यादान)
3. अग्रवाल लता, तितली फिर आयेगी, पृ. क्र. 3 (प्रतिमा विसर्जन)
4. वही पृ. क्र. 3
5. अग्रवाल लता, लकी है हम, पृ. क्र.67 (डर से डर की हार(
6. उपरोक्त, दहलीज का दर्द, पृ. क्र. 120 (पौरुष)
7. वही पृ. क्र. 120
8. उपरोक्त, लकी है हम, पृ. क्र. 66 (मुस्कान लुटेरे)
9. वही पृ. क्र. 68